**Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies**
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2024 = 8.153
https://www.srjis.com/issues_data/242
Peer Reviewed & Refereed Journal, NOV-DEC 2024, Vol- 13/86

# ग्रामीण विकास में वृद्धजनों की भूमिका

**डॉ सहदेव सिंह (पीएच. डी.)**
*डॉ भीमराव आम्बेडकर वि0 वि0 आगरा*

**Paper Received On**: 20 NOV 2024
**Peer Reviewed On:** 24 DEC 2024
**Published On:** 01 JAN 2025

***Abstract***

*भारत में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् से ग्रामीण अध्ययनों के प्रति बढ़ती हुई रूचि के कारण ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास को एक नई दिशा प्राप्त हुई। स्वतंत्रता के कुछ वर्ष पहले महात्मा गाँधी ने ''गाँवों को वापस चलो'' का जो नारा दिया था। उसे साकार करने के लिए भारत सरकार ने ग्रामीण विकास के प्रति अपना ध्यान केन्द्रित किया। इस प्रयास के अन्तर्गत ग्रामीण जीवन का अध्ययन करने के लिए न केवल विशेष शोध समितियाँ गठित की गई बल्कि ग्रामों के चतुर्दिक विकास को अपना प्राथमिक लक्ष्य मानते हुए सामुदायिक विकास कार्यक्रम को भी व्यापक स्तर पर लागू किया जाने लगा। योजना आयोग का गठन होने के पश्चात् इसी आयोग से सम्बद्ध एक ''कार्यक्रम मूल्याँकन संगठन'' की स्थापना की गई जिसका उद्देश्य भारत जैसे आर्थिक, भौगोलिक और साँस्कृतिक विविधता से युक्त देश के लिए प्रत्येक क्षेत्र की जानकारी प्राप्त कराना तथा विभिन्न विकास योजनाओं को प्रभावशाली ढंग से लागू करना था। भारतीय समाज के पुनर्निर्माण के महत्व को स्वीकार करते हुए भारत के बुद्धिजीवियों का ध्यान ग्रामीण जीवन की ओर आकर्षित हुआ जिसके फलस्वरूप ग्रामीण विकास में व्यापक रूचि ली जाने लगी है। वृद्धजनों की कृषि सेक्टर सम्बन्धी, लघु सिंचाई एवं कृषि विकास, पशु पालन तथा दुग्ध उत्पादन, विविध लघु एवं कुटीर उद्यमों सम्बन्धी कुशलतायें, अगली पीढ़ी को हस्तगत कर, निश्चित ही ग्रमीण विकास में सहयोगी होती हैं, जिनकी कभी गणना नहीं की जाती है।*

***पारिभाषिक शब्दः*** *ग्रामीण सामाजिक संगठन, लघु किसान, सीमान्त किसान*

**विश्लेषण, विवेचन एवं निष्कर्षः** डॉ. देसाई के शब्दों में ''स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् ग्रामीण सामाजिक संगठन, उसकी संरचना, प्रकार्य एवं विकास का एक व्यवस्थित अध्ययन केवल आवश्यक ही नहीं था अपितु यह अनिवार्य भी हो गया था।'' इस सन्दर्भ में ग्रामीण विकास से सम्बन्धित सरकार के सभी प्रयत्नों से भारत में ग्रामीण क्षेत्रों के आर्थिक विकास को अत्यधिक प्रोत्साहन मिला। ग्रामीण विकास को समझने के लिए निम्न ग्रामीण इकाइयों को समझना आवश्यक हो जाता है –

**लघु किसान** :ऐसा किसान, जिसके पास 2.5 एकड़ से 5 एकड़ तक भूमि होती है, जिस पर वह परिवार का पालन करता है लघु किसान कहलाता है।

**सीमान्त किसान** :ऐसा किसान जिसके पास 5/3 एकड़ सिंचित अथवा 2.5 एकड़ से कम असिंचित भूमि हो, जो असिंचित हो अथवा किसी प्रकार की जमीन हो, सीमान्त किसान कहलाता है।

कृषि श्रमिक : कृषि श्रमिक; एक सामान्य श्रमिक होता है, जो अपनी आय का 50 या 50 से अधिक प्रतिशत, कृषि पर ाारीरिक श्रम के विभिन्न कार्य करके (मजदूरी) प्राप्त करता है। कृ ा श्रमिक केवल किसी खेत पर उत्पादन करने वाले श्रमिक को ही नहीं कहते, अपितु उस श्रमिक को भी कृ ा श्रमिक कहते हैं जो पशुपालन, फलोद्यान, दुग्ध व्यवसाय, मधुमक्खी पालन, मुर्गीपालन, सूअर पालन मत्स्य पालन आदि सहायक व्यवसायों के कार्य करते हैं।

*Copyright © 2025, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*

**भूमिहीन श्रमिक** : वह श्रमिक; जिसके पास अपनी कोई निजी भूमि नहीं होती जिससे वह जीविकोपार्जन कर सकें बल्कि दूसरों के खेत या भूमि पर अपनी जीविका निर्वाह करने के लिए  ाारीरिक श्रम के विभिन्न कार्य करके दैनिक मजदूरी प्राप्त करता है, भूमिहीन श्रमिक कहलाता है।

**ग्रामीण–कारीगर/दस्तकार (रूरल आर्टिसन्स)** : ऐसे व्यक्ति; जो ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करते हैं तथा जिन्हें किसी वस्तु या उपकरण को तैयार (निर्मित) करने का तकनीकी ज्ञान होता है ग्रामीण कारीगर केवल अपने व्यवसाय (दस्तकारी के कार्यों) से अपने परिवार का भरण–पोषण करते हैं। कृषि अथवा अन्य किसी कृषि व्यवसाय में उनका कोई योगदान नहीं होता।

**मुख्य ब्यवसाय** : ऐसा ब्यवसाय, जिससे 50 प्रतिशत अथवा 50 प्रतिशत से अधिक वार्ि क आय होती है, मुख्य व्यवसाय कहलाता है। वशर्ते उस ब्यवसाय से परिवार का गुजारा चलता हो।

**सहायक ब्यवसाय** : किसी भी परिवार के मुख्य ब्यवसाय के अतिरिक्त, वे अन्य विभिन्न पूरक ब्यवसाय, जो पारिवारिक आय वृद्धि में सहायता प्रदान करते हैं, सहायक ब्यवसाय कहलाते हैं।

**सहभागिता** : सहभागिता दो शब्दों ''सह'' तथा ''भागिता'' का सम्मिलन है। इसका अर्थ है कि एक या एक से अधिक सामाजिक प्राणी कोई कार्य अर्थ पूर्ण ढंग से साथ–साथ कर रहे हैं या किसी क्रिया कलाप में भाग लेते रहे हैं।

ग्रामीण विकास में वृद्धजनों के सहयोग को निम्न उपश्रेणियों में विभाजित किया गया–

(1) कृषि सेक्टर सम्बन्धी कुशलतायें

(2) लघु सिंचाई एवं कृषि विकास सम्बन्धी कुशलतायें

(3) पशु पालन तथा दुग्ध उत्पादन सम्बन्धी कुशलतायें

(4) विविध लघु एवं कुटीर उद्यमों सम्बन्धी कुशलतायें

वर्तमान समय में भारत में वृद्धावस्था प्रमुख समस्या के रूप में उभर कर सामने आ रही है। भारत में वृद्धावस्था की सही स्थिति हमें सन् 1978 के समाज कल्याण में स्वामीनाथन सरोजा के एक प्रकाशित लेख में देखने को मिलती है। स्वामीनाथन सरोजा के अनुसार वृद्धों की जिन्दगी और समय; और भी दुखमय (कष्टमय) हो जाते हैं, जब दुर्भाग्य से उनमें चलने–फिरने की शक्ति न रहे या बिस्तर पकड़ ले या उनका देखना, सुनना कम हो जाए और उनकी याददाश्त (स्मरण शक्ति क्षींण हो जाय) कमजोर पड़ जाए। उस समय तो वृद्धावस्था का अभिशाप दुगुना बढ जाता है, जब बुढापे में शारीरिक शक्ति और निर्धनता साथ–साथ आ जाएं  तो परिस्थितियॉ और भी दुष्कर हो जाती हैं।

आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में जहाँ संयुक्त परिवार प्रणाली जीवान्त तथा जिंदा है, वहाँ यह सुरक्षा का कार्य किया जा रहा है। परन्तु वर्तमान समय में अनेक परिवर्तनकारी शक्तियों ने संयुक्त परिवार प्रणाली के स्वरूप में परिवर्तन कर इसको एकाकी बना दिया है जिसके कारण आज वृद्ध व्यक्ति अपने को असुरक्षित महसूस करने लगा है। पश्चिमी शिक्षा, औद्योगीकरण, नगरीकरण तथा व्यक्तिवादिता की भावना के कारण वृद्ध अपने को असुरक्षित व असहाय पाते हैं। भारतीय संयुक्त परिवारों में वृद्धों के आदर एवं सम्मान की परम्परा रही है लेकिन यह दुर्भाग्य ही है कि आज भारत में यह परम्परा तेजी के साथ टूटती जा रही है। संयुक्त परिवार के नई पीढी के व्यक्तित्व को विघटित कर पुरानी तथा नयी पीढी दोनों ने बहुत कुछ खोया है। समाज के परिवर्तनशील मूल्य हमारी परम्परा को नष्ट करने के साथ–साथ हमारी संस्कृति की धरोहर को भी नष्ट कर रहे हैं। आज इस आधुनिकतावादी संस्कृति ने वृद्धावस्था में व्यक्ति को पृथकीकरण की समस्या से ग्रसित कर दिया है। आज नई पीढी के लोगों के पास अपने बुजुर्गो/वृद्धजनों से विचार–विमर्श करने, सलाह लेने तथा उनकी इच्छाओं तक को जानने का समय नहीं है। ऐसी स्थिति में उस व्यक्ति की मनःस्थिति की कल्पना सहज ही की जा सकती है जो अपने सारे जीवन की पूंजी को उस नई पीढी के व्यक्तित्व को विघटित कर देता है। प्रायः यह कहा जाता है कि वृद्ध व्यक्ति नई पीढी के साथ समायोजित नहीं कर पाते जिसके कारण उनको अनेक सामाजिक एवं व्यावहारिक

*Copyright © 2025, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*

समस्याओं का सामना करना पडता है। जबकि वास्तविकता कुछ और तथा कुछ भिन्न है। मेरी दृष्टि में नई पीढी यदि थोडा आदर व सम्मान वृद्धों को दे तो यह समायोजन न करने की स्थिति पैदा ही नही होती। पृथकीकरण की समस्या भी इसी कारण से हमें नगरीय परिवेश की तुलना में ग्रामीण अंचलों में ज्यादा देखने को मिलती है।

**तालिका 1: ''क्या व्यवसाय से सम्बन्धित कुशलताओं पर वृद्धजनों के अनुभवों का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है?'' – निदर्शों के उत्तर**

| क्रम | निदर्शों के प्रत्युत्तर (अभिमत) | आवृत्तियॉ | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1 | हॉ | 261 | 87.00 |
| 2 | उदासीन | 33 | 11.00 |
| 3 | नहीं | 06 | 02.00 |
| | योग | 300 | 100.00 |

प्रसंगाधीन प्रस्तुत तालिका (1) के प्राथमिक तथ्यों के विश्लेषण तथा विवेचन से विदित होता है कि अध्ययन किए गए कुल 300 सूचनादाताओं में से 261(87 प्रतिशत) सूचनादाताओं ने यह स्वीकार किया है कि सकारात्मक प्रभाव पड़ता है; जबकि 33(11 प्रतिशत) सूचनादाताओं ने इस सन्दर्भ में उदासीन अभिमत प्रकट किए हैं; किन्तु मात्र 6(2 प्रतिशत) सूचनादाताओं ने नकारात्मक।

**तालिका (2) : कुशलताओं पर वृद्धजनों के अनुभवों के प्रभाव; कृषक श्रेणी सापेक्ष अभिमत**

| क्रम | कृषि तथा कृषि तकनीक पर पड़ने वाला प्रभाव | कृषक श्रेणी सापेक्ष अभिमत (संख्या/प्रतिशत) | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| | | लघु कृषक | सीमान्त कृषक | उपसीमान्त कृषक | समस्त (प्रतिशत) |
| 1. | सकारात्मक | 100(38.31) (100.00) | 144(55.17) (90.57) | 11(06.52) (41.46) | 261(100.00) (87.00) |
| 2. | उदासीन | --(00.00) (00.00) | 13(39.39) (08.18) | 20(60.61) (48.78) | 33(100.00) (11.00) |
| 3. | नकारात्मक | --(00.00) (00.00) | 02(33.33) (01.25) | 04(66.67) (09.76) | 06(100.00) (02.00) |
| | समस्त योग (प्रतिशतता) | 100(33.33) (100.00) | 159(53.00) (100.00) | 41(13.67) (100.00) | 300(100.00) (100.00) |

(नोट– कोष्ठकों के अन्तर्गत प्रदर्शित ऑकड़े प्रतिशतता दर्शाते हैं)

वृद्धजनों की कृषि सेक्टर सम्बन्धी, लघु सिंचाई एवं कृषि विकास, पशु पालन तथा दुग्ध उत्पादन, विविध लघु एवं कुटीर उद्यमों सम्बन्धी कुशलतायें, अगली पीढ़ी को हस्तगत कर, निश्चित ही ग्रमीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करते हैं, जिनकी कभी गणना नहीं की जाती है।

**संदर्भ**

*पाठक के.पी. : रोल ऑफ आई.आर.डी.पी. इन दि रूरल डबलपमेन्ट ऑफ यू.पी.– ए स्टडी ऑफ मैनपुरी डिस्ट्रिक्ट, रिसर्च पब्लिकेसन्स, जयपुर 2009, पृ.7*

*सिंह आर.के.; कृषि तथा ग्रामीण विकास की समस्यायें, मीतल प्रकाशन मथुरा, 2006 पृ.179*

*कुरैजा एस.एल.; भारतीय गांवों के बदलते परिदृश्य; धर्मयुग, अप्रैल, 11 (अंक) 2007 पृ.30*

*Copyright © 2025, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*

पान्सियन जे.ए.; नेशनल डवलपमेन्ट : ए सोसियोलाजिकल कन्ट्रीब्युशन, दि दाम्यु पब्लिकेशन्स, (प्रा. लिमि.) मारटन न्यूयार्क, 2008 पृ. 106

द्विवेदी के.डी. तथा अन्य; विकास का समाजशास्त्र, समाज विज्ञान समीक्षा, बी.एच.यू., वाराणसी (विश्वविद्यालय प्रकाशन) प्रकाशित शोध लेख 2008 पृ.6

मिश्रा एस.के.; सामाजिक सहयोग; राष्ट्रीय शोध पत्रिका : अन्तर्सामाजिक शोध प्रबन्धन, श्रीष शिक्षण संस्थान, उज्जैन (म.प्र.) 2005:61

ब्रुक फील्ड एच.; इण्टर डिपेन्डेन्ट डवलपमेन्ट, मैथ्यून एण्ड कम्पनी लिमिटेड; दि फ्री प्रेस लन्दन, 2005:11–12

सिंह एस.डी. एवं कुलश्रे ठ पी.के; रोल ऑफ कामर्शियल बैंक्स एण्ड कोपरेटिब्स इन फाइनेन्सिंग आई.आर.डी. प्रोग्राम, विवेकानन्द एजूकेशनल सोसायटी, एटा; 2007; वाल्यूम–2, पृ.31 (प्रकाशित शोध पत्र)

सिंह एच.पी.; रोल ऑफ कम्प्यूनिकेशन इन दि रूरल डबलपमेन्ट ऑफ यू.पी. प्रकाशित ाोध प्रबन्ध : रिसर्च प्रकाशन जयपुर (राज.) 2009 पृ.5

सक्सैना एच.; कम्युनिकेशन एण्ड रूरल डबलपेमेंट–ए केस स्टडी इन रूरल राजस्थान, अजन्ता पब्लिसर्स मथुरा, (उ.प्र.) 2008, पृ.37

अस्थाना बी.एन.; (क) रूरल डबलपमेंट, इण्डियन जर्नल आफ एग्रीकल्चरल इकोनोमिक्स 2010, वाल्यूम–26, अंक–4

(ख) आई.आर.डी.पी.; कन्सेप्ट एण्ड इम्पलीमेन्टेशन कुरूक्षेत्र 1985

वाल्यूम 25, (विशेशांक) पृ.15

Copyright © 2025, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies